R. N. Reddi, regarding quarters for Railway Employees, on the Table of the House. [*Placed in Library, see* No. LT-4377/65].

12.05 hrs.

QUESTION OF PRIVILEGE

श्री किशन पटनायक (सम्बलपुर) : नियम संख्या 222 के अन्तर्गत "टाइम्स आफ इंडिया" में 5 तारीख को छपी एक खबर के सम्बन्ध में मैं विशेषाधिकार का प्रश्न उठा रहा हूं । फाइनेंस बिल की बहस पर बोलते हुए डा० राम मनोहर लोहिया ने और श्री विशनचन्द्र सेठ ने श्री टी० टी० कृष्णमाचारी के खिलाफ कुछ इल्जाम लगाये थे । उन का जवाब देते हुए 4 तारीख को श्री टी० टी० कृष्णमाचारी साहब ने कुछ बातें कही थीं । उन में श्री विशनचन्द सेठ के बारे में उन्होंने कहा था कि :

"He seems to be an innocuous person —I think a very tame and innocuous person. Somebody must have put him to do it."

इस को छापते हुए "टाइम्स आफ इंडिया" ने 5 तारीख को लिखा :

"The fact that neither Dr. Lohia nor Mr. Bishen Chander Seth, both of whom had made personal references to the Finance Minister, was present in the House to hear his reply would mean that somebody must have put them to do it."

यह बहुत बुरे ढंग का समाचार है और मेम्बरों के विशेषाधिकारों का हनन करता है । इसलिये "टाइम्स आफ इंडिया" में छपी खबर के खिलाफ विशेषाधिकार का प्रश्न उठता है ।

प्रेस के बारे में एक हमदर्दी का वाक्य भी मैं कह दूं कि चूंकि टी० टी० के० साहब के खिलाफ इल्जाम शायद कुछ सही थे या पूरे सही थे इसलिये वह इस ढंग से मरोड़ कर अपना एक्स्प्लेनेशन दे रहे थे बगैर नाम लिये हुए, सीधे ढंग से बिना बोले इस तरह से बतला रहे थे कि शायद प्रेस पर यह इम्प्रेशन पड़ा कि वह दोनों के बारे में बोल रहे हैं या वह अच्छी तरह से समझ नहीं पाया कि किस के बारे में बोल रहे हैं । मंत्री महोदय जब बोलते हैं, अगर सीधे ढंग से बोलें, इल्जामों का अच्छी तरह से जवाब दें तो इस तरह के भ्रम पैदा नहीं हो सकते हैं । साथ ही मुझे इस बात पर ऐतराज है कि जब इस बारे में प्रिविलेज की बात उठ रही है तब श्री टी० टी० कृष्णमाचारी यहां मौजूद भी नहीं हैं ।

ऐसी स्थिति में मैं मूव करता हूं कि आप इस बात को प्रिविलेज कमेटी में भेजें । मैं आप से यह भी अनुरोध करता हूं, अगर आप इजाजत दें, कि श्री विशनचंद्र सेठ और डा० लोहिया को स्पष्टीकरण करने का मौका दें ।

अध्यक्ष महोदय : यहां स्पष्टीकरण करने की जरूरत नहीं है । आप ने प्रिविलेज मोशन फाइनेन्स मिनिस्टर के खिलाफ नहीं किया था, वह "टाइम्स आफ इंडिया" के बखिलाफ था । उन्होंने जो खबर छापी थी उस के खिलाफ आप ने प्रिविलेज मोशन दिया था । मैंने "टाइम्स आफ इंडिया" को जवाब देने के लिए लिखा था और उन्होंने यह लिखा है :

"The Finance Minister did not refer to anybody by name, but the two persons who had made personal references to him were Dr. Lohia and Mr. Bishen Chander Seth. Our Parliamentary Correspondent wrote his impressions of the proceedings in the bona fide belief that he was being objective. In any case, we have no hesitation in offering our sincere regret which may kindly be accepted."

इसलिये मैं समझता हूं कि बाकी बातों की जरूरत नहीं है । जैसा होता है इन मामलों, में उन्होंने रिग्रेट का इजहार कर

[अध्यक्ष महोदय]

दिया, और अब इस को खतम किया जाये ।

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद) : मेरा एक निवेदन है । मैं यह नहीं कहता कि टाइम्स आफ इंडिया के खिलाफ कोई कार्रवाई की जाये । वह तो अखबार वालों में और राजनीति वालों में ऐसा सम्बन्ध रहता है कि उनको गालियां देने में ही प्रेम निकलता है । तो मैं उसके बारे में नहीं कह रहा ।

मैं आप से कुछ अध्यक्ष के बारे में कहना चाहता हूं, आपके बारे में नहीं, अध्यक्ष के बारे में ।

एक माननीय सदस्य : दोनों में क्या अन्तर है ।

डा० राम मनोहर लोहिया : अन्तर इस मानी में है कि मैं सिद्धान्त की कुछ बातें कहूंगा, जो इन्होंने यहां पर किया है उसके बारे में नहीं ।

अध्यक्ष महोदय : डाक्टर साहब, क्या आप स्पीकर के आफिस के बारे में . . .

डा० राम मनोहर लोहिया : आप मुझे दो मिनट का मौका दीजिये ।

अध्यक्ष महोदय : जो चीज यहां हमारे सामने हो अगर वह चीज उससे सम्बन्ध रखती है तो मैं आपको मौका दे सकता हूं, लेकिन अगर आप कोई दूसरी चीज उठाना चाहते हैं तो इस वक्त नहीं उठा सकते, उसके लिए कोई और मौका देखिये, मैं आपको इजाजत दूंगा ।

डा० राम मनोहर लोहिया : इसी सम्बन्ध में . . .

अध्यक्ष महोदय : इस सम्बन्ध में तो अब कुछ बाकी नहीं है । अखबार में एक चीज निकली, उस पर ऐतराज किया गया, उनका जवाब मांगा गया, उन्होंने माफी मांग ली और वह मामला खत्म हो गया ।

डा० राम मनोहर लोहिया : अभी एक और सवाल है . . .

अध्यक्ष महोदय : सवाल तो कई और होंगे, मगर मैं अर्ज कर रहा हूं कि इस वक्त उनको नहीं उठाया जा सकता ।

डा० राम मनोहर लोहिया : आपके बारे में कोई चीज नहीं है । अध्यक्ष पद के बारे में है ।

अध्यक्ष महोदय : किसी और मौके पर आप इस को उठा सकते हैं । श्री हजरनवीस ।

श्री बागड़ी (हिसार) : अध्यक्ष महोदय . . . .

अध्यक्ष महोदय : मैंने अगला आइटम बुलाया है ।

श्री बागड़ी : उसी के बारे में . .

अध्यक्ष महोदय : आप मुझ से मिलने भी आये थे । मैंने आपसे कहा कि लिख कर दें और इसलिये मैंने आपसे दफ्तर में नहीं लिखवाया कि मैं बगैर टाइप किया पढ़ नहीं सकता । लेकिन आपने फिर हाथ से लिख कर मेज दिया । मैं उसे पढ़ नहीं सका । मैंने फिर उसे टाइप होने भेजा है, मैं उसको देख लूंगा ।

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : माननीय डा० लोहिया का खुलासा तो छपवाएं टाइम्स आफ इंडिया में या और अखबार में । इतना तो आप कर ही सकते हैं, जैसे कि नन्दा जी का छपवाया । क्या मंत्री जी के लिए अलग चीज होगी और . .

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइये ।

श्री मधु लिमये : खुलासा छपाइए जैसे नन्दा जी का छपवाया ।

अध्यक्ष महोदय : इस तरह खड़े हो कर कहने लगना ठीक नहीं है । मिस्टर हजरनवीस ।